हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

हिंदी विभाग इस वर्ष अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है, इसी क्रम में इसी वर्ष जगदीश गुप्त जी का भी जन्मशती वर्ष है। वे हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष रह चुके थे। उनकी स्मृति में इस कार्यक्रम के ज़रिये उन्हे काव्य पाठ एंव अतिथियों के विशिष्ट व्याख्यान के माध्यम से याद किया गया। इस दौरान मंच पर प्रो. स्मिता अग्रवाल, प्रो.अजय जैतली, प्रो.प्रणय कृष्ण विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग एवं लोकप्रिय आदिवासी कवि अनुज लुगुन जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

सभी मुख्य अतिथियों का स्वागत लक्ष्मण प्रसाद गुप्त, बसंत त्रिपाठी, और वीरेन्द्र कुमार मीणा ने पौधा देकर किया। कविता पाठ एवं गज़ल की प्रस्तुति में आदर्श कुमार को प्रथम पुरस्कार, प्रतीक ओझा को द्वितीय पुरस्कार व आदित्य पाण्डेय को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। हर्षिता त्रिपाठी, हर्षित उपाध्याय,स्वतंत्र गुप्ता, प्रियम दुबे, सविता एकांशी, अग्निवेन्द्र सिंह को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन सभी प्रतिभागियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया, जिसका संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर सुरभि त्रिपाठी जी ने किया।

व्याख्यान सत्र के दौरान अतिथिगण द्वारा अपने वक्तव्य के माध्यम से कविता की समीक्षा की गई। इस दौरान प्रो अजय जैतली ने जगदीश गुप्त से जुड़ी यादें साझा की। उन्होंने कवि जगदीश गुप्त की पंक्ति "आंख भर देखा कहां, आंख भर आयी" का ज़िक्र किया। उनकी कला की मर्मज्ञता का संदर्भ दिया और बताया कि वे दृश्यकला विभाग में भी कक्षाएँ लेते थे।

प्रो स्मिता अग्रवाल ने अपने लंबे अनुभव के माध्यम से कविता को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने वैश्विक कविताओं का उदाहरण देते हुए बताया कि कवि को क्या करना चाहिए। उन्होंने चिंता जताई कि युवा कवि वैश्विक समस्याओं पर कम बात कर रहे हैं, जबकि उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कवि अनुज लुगुन ने प्रतिभागियों से पूछे गये दो सवालों से बातचीत शुरू की, पहला यह कि आप कविता क्यों लिखते हैं? और कविता क्यों ज़रूरी है? इस पर बात करते हुए उन्होंने कविता के महत्व और उसकी सांस्कृतिक उपादेयता पर बात की। उन्होंने कहा कि कविता मनुष्य की बात करती है, और आज मनुष्य की बात करना, सबसे जोखिम की बात है। इसलिए कविकर्म आसान नहीं है, उसके लिए ख़ुदको खपाना पड़ता है। इस दौरान लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता मंच संचालन कर रहे थे।

अंत में प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया । पुरस्कार स्वरूप राजकमल प्रकाशन की ओर से पुस्तकें भेंट की गईं। इस दौरान मंच संचालन एसोसिएट प्रोफेसर बसंत त्रिपाठी ने किया।

कार्यक्रम का समापन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो प्रणय कृष्ण, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग ने किया।

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

13 फरवरी 2024 को हिंदी विभाग के न्यू हॉल में 'आदिवासी साहित्य: परख एवं प्रवृत्ति' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दक्षिण बिहार विश्वविद्यालय, गया में सहायक आचार्य पद पर कार्यरत व प्रतिष्ठित कवि एवं आलोचक डॉ. अनुज लुगुन थे। मुख्य वक्ता अनुज लुगुन ने बहुत ही सारगर्भित रूप से आदिवासी साहित्य परंपरा का मूल्यांकन किया, जहाँ उन्होंने समाज की ऐतिहासिक समीक्षवादी दृष्टि की ओर आकर्षित करते हुए हिंदी या मुख्य धारा की भाषाओं के इतर आदिवासी मातृभाषा में रचित साहित्य के अवलोकन पर बल दिया। जो उस पूरे विन्यास को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

इसी क्रम की आदिवासी दर्शन की बात करते हुए "प्राकृतिक संसाधनों को पूर्वजों से मिली हुई विरासत से ज्यादा आने वाली पीढ़ियों से उधार के रूप में देखना चाहिए" की संरक्षण वादी अवधारणा भी रखी। आदिवासी गीतों में समय के अनुसार किस प्रकार नई पद्धतियों और बिंबों को प्रवेश मिलता है, इस प्रकार अंत में उन्होंने सामूहिकता की भावना के प्रसार का मंत्र देकर, जसिंता करीकेट्टा की पंक्तियां "वो हमारे सभ्य होने का इंतज़ार कर रहे हैं और हम उनके मनुष्य होने का" का वाचन किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. बसंत त्रिपाठी ने अनुज लुगुन के उद्बोधन की प्रशंसा करते हुए, उसके कई पक्षों को विस्तारित किया। उन्होंने आदिवासी भाषा विज्ञान के रचयिता हीरालाल शुक्ल और लाला जगदलपुरी के काम की महत्ता बताई ,पुराने मिथकों को तोड़ती और नए मिथकों को गढ़ती आदिवासी साहित्यिक प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए लोहासुर और कोयलासुर जैसे मिथकीय पात्रों के बारे में भी बताया।

व्याख्यान के उपरांत कार्यक्रम का संचालन कर रहे वीरेंद्र कुमार मीणा ने अनुज लुगुन की कई कविताओं में संवेदना के कई आयामों को उनकी पंक्तियों को उद्धृत करते हुए श्रोताओं के समक्ष रखा। कार्यक्रम में अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत हिंदी एवं आधुनिक भाषा विभाग ,इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. प्रणय कृष्ण ने किया। उन्होंने आमंत्रित मुख्य वक्ता को शॉल और डॉ. गाजुला राजू ने पौधा भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीरेंद्र कुमार मीणा ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जनार्दन ने किया।